ऋग्वेद से ऋचाएँ

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

उनकी [सूर्यदेवता की] प्रकाशमान किरणें अब उन देव से परिचय कराती हैं
जो उन समस्त प्राणियों के ज्ञाता हैं
जो सूर्य के दर्शन कर सकते हैं।

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य ।
विश्वमा भासि रोचनम् ॥

प्रकाश [ज्योति] को उत्पन्न करने वाले,
हे सूर्यदेव, आप वेगवान व सुन्दर हैं
और पूरे दीप्तिमान आकाश को आलोकित करते हैं।

उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥

अन्धकार के परे देखते हुए
हम परम प्रकाश [परम ज्योति] तक पहुँचते हैं
और देवाधिदेव सूर्यदेव को प्राप्त करते हैं जोकि प्रकाश हैं।

***

सूर्यदेवता के सम्मान में ये ऋचाएँ ऋग्वेद की एक स्तुति से हैं जो कि प्राचीन भारत के चार वेदों में से सबसे आदिकालीन व विस्तृत रचना है। ऋग्वेद में १०,००० से भी अधिक श्लोक हैं जिन्हें 'ऋच्' या 'ऋचा' कहा जाता है। इन ऋचाओं का स्तवन अग्नि, वायु, पृथ्वी, वरुण आदि देवताओं के साथ ही रुद्र, इन्द्र और विष्णु के रूप में, परमेश्वर का आवाहन करने हेतु किया जाता है।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।